श्री शंकर शिक्षायतन

वैदिक शोध केन्द्र

वैदिक विज्ञान संगोष्ठी : अम्भोवादविमर्श

<u>प्रतिवेदन</u>

श्री शंकर शिक्षायतन, नई दिल्ली द्वारा दिनांक २८ अगस्त २०२१ को अम्भोवादविमर्श विषयक वैदिक विज्ञान वेब संगोष्ठी का समायोजन किया गया। पं. मधुसूदन ओझा प्रणीत सृष्टिविषयक वादग्रन्थविमर्श शृंखला के अन्तर्गत समायोजित हो रहे इस वर्ष का यह आठवां कार्यक्रम था जो पं. मधुसूदन ओझाजी के सृष्टि प्रतिपादक ग्रन्थ 'अम्भोवाद' को आधार बनाकर समायोजित किया गया था।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में अपने आरम्भिक वक्तव्य में श्री शंकर शिक्षायतन के समन्वयक तथा संस्कृत एवं प्राच्यविद्या अध्ययन संस्थान के संकायप्रमुख प्रो. सन्तोष कुमार शुक्ल ने कहा कि श्वेताश्वतरोपनिषद् में सृष्टि की उत्पत्ति विषयक सिद्धान्त का स्पष्ट उल्लेख मिलता है। वहाँ काल, स्वभाव, नियति, यदृच्छा, भूत और पुरुष का जगत् के कारण के रूप में वर्णन मिलता है-

"कालः स्वभावो नियतिर्यदृच्छा भूतानि योनिः पुरुष इति चिन्त्या।
संयोग एषां न त्वात्मभावादात्माप्यनीशः सुखदुःखहेतोः॥"

- श्वेताश्वतरोपनिषद् १.२

पं. मधुसूदन ओझा जी ने अपने ग्रन्थ दशवादरहस्य में सृष्टिविषयक दस वादों का उल्लेख किया है। ये वाद हैं- सदसद्वाद, रजोवाद, व्योमवाद, अपरवाद, आवरणवाद, अम्भोवाद, अमृतमृत्युवाद, अहोरात्रवाद, दैवाद एवं संशयवाद-

"श्रुतः श्रुतिभ्यः सदसत्प्रवादो रजः प्रवादश्च बहुप्रसिद्धः।
व्योमापरावावरणप्रवादश्चाम्भः प्रवासोऽमृतमृत्युवादः॥
वादस्त्वहोरात्रकृतश्च दैवः सन्देहवादोऽथ विनिर्णयात्मा।
सिद्धान्तवादश्च तदन्तरन्येऽप्यन्येकवादा इति तान् वदामः॥"

- दशवादरहस्य, भूमिका पृ.१२

उपर्युक्त दशवाद अतिप्राचीन हैं जिनका साक्षात्कृतधर्मा ऋषियों के द्वारा वेदग्रन्थों में व्यवस्थित रूप में उपस्थापन किया गया है-

इह तु वयं यद् ब्रूमो दशविज्ञानं पुरातनं तच्च ।
स्वर्गे देवैर्दृष्टं वेदग्रन्थोऽवतारितं धन्यम् ॥

- वही

यहाँ ओझाजी कहते हैं कि ये सृष्टि प्रतिपादक वाद परस्पर विरुद्ध नहीं हैं अपितु ये सभी वाद परस्पर मिलकर एक नूतनरूप में सिद्धान्तवाद का प्रतिपादन करते हैं-

"वादैरमीभिर्नवभिः प्रतीताः सर्वेऽपि तेऽर्था न पृथग्विरुद्धाः ।
सर्वैरमीभिर्मिलितैरिहैको वादोऽस्ति तं चोत्तरतः प्रवक्ष्ये ॥"

- दशवादरहस्य, पृ.९५, कारिका ३

दशवादरहस्य ग्रन्थ में वर्णित अम्भोवाद शीर्षक के अन्तर्गत पं ओझाजी ने लिखा है कि इस जगत् का स्वरूप त्रिलोकात्मक है। ये तीन लोक हैं- पृथिवी, अन्तरिक्ष एवं द्युलोक। इस त्रिलोकी का स्वामी सूर्य नारायण है। वह समुद्र के मध्य सुशोभित है-

"त्रैलोक्यमुक्तं जगतः स्वरूपं पृथ्व्यन्तरिक्षं द्युरितिप्रभेदात् ।
सूर्यस्त्रिलोकीपतिरेष सूर्यो नारायणो भाति समुद्रमध्ये ॥"

- दशवादरहस्य पृ. ७१ कारिका १

यह सूर्य समुद्र से ही उत्पन्न हुआ एवं उत्पत्ति के पश्चात् उसी में लीन होता है । सूर्य के नीचे तथा उससे ऊपर भी आपः ही दिखाई देता है । अतः समस्त विश्व ही आपोमय है।

"समुद्रतोऽजायत एष सूर्यस्तत्रैव संतिष्टत एष पश्चात् ।
अर्वाक् च सूर्यात् परतस्तथाऽऽपो दृश्यन्त आपोमयमस्ति विश्वम् ॥"

- दशवादरहस्य पृ. ७१ कारिका २

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रो. गणेशीलाल सुथार, पूर्वनिदेशक, पं. मधुसूदन ओझा शोध प्रकोष्ठ, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर ने पं. मधुसूदन ओझा प्रणीत अम्भोवाद ग्रन्थ के कतिपय महत्त्वपूर्ण विषयों को उद्घाटित करते हुए कहा कि अम्भोवाद के 'एमूषाधिकरण' में पुष्करपर्ण का निरूपण प्राप्त होता है। पं. ओझाजी के अनुसार अग्नि रूप ब्रह्मा का प्रादुर्भाव पुष्करपर्ण से हुआ है। ओझा जी उत्पत्ति के क्रम को व्याख्यायित करते हुए लिखते हैं कि यह उत्पत्ति प्रक्रिया प्रजापति से होती है। वैदिकविज्ञान में प्रजापति को इन्द्र कहा गया है। इन्द्र आत्मतत्त्व के रूप में संपूर्ण इन्द्रियों को धारण करता है। पुर् के बिना उस इन्द्र अर्थात् आत्मा का स्वरूप नहीं बनता है। प्रजापति अप् समूहात्मक इन्द्र के लिए पुर् का निर्माण करता है, अतः पुर्-कर (पुरं करोति इति) से पुष्कर शब्द बना है। श्रुति की परोक्ष भाषा में इसे पुष्कर कहा गया है। पर्ण का अर्थ स्पष्ट करते हुए प्रो. सुथार ने कहा कि फैला हुआ स्थूल पर्त

ही पर्ण है। पुष्कर जलसंघात के आयतन से बना था, अतः उसे (अप् तत्त्व को) पुष्करपर्ण कहते हैं।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि प्रो. सरोज कौशल, पूर्व विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर ने अपने उद्बोधन में कहा कि सृष्टि से पूर्व जो सर्वथा अव्यक्त सत्य था वह ब्रह्म शब्द से जाना जाता है। उस ब्रह्म से ही अम्भः, मर, मरीचि और आपः इन चार तत्त्वों की उत्पत्ति हुई है। चन्द्रलोक में यह अम्भ सोम रूप में एवं सूर्यलोक में यह मरीचि रूप मे रहता है। विषय को स्पष्ट करते हुए प्रो. कौशल ने कहा कि अम्भ से त्रिलोकी (पृथ्वी, अन्तरिक्ष और द्युलोक) मर से पृथ्वी लोक की उत्पत्ति होती है। मरीचि वे आपः हैं जो सप्तरश्मि सूर्य की किरणों से द्रवित होते हैं। वे रसरूप होते हैं।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रो. सत्यप्रकाश दूबे, पूर्वविभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर ने कहा कि इस सृष्टि का मूल ब्रह्म है। उसी एक तत्त्व से इस सृष्टि की उत्पत्ति हुई है। पं. ओझा जी ने जितने वादों को वैदिकप्रमाण के आधार पर ग्रन्थ के रूप में व्यवस्थित किया है वे सभी सिद्धान्त सहायक कारण के रूप में वैदिकदर्शन में प्रसिद्ध हैं और ब्रह्म इस जगत् का मूल कारण है।

इस अवसर पर प्रो. गणेशीलाल सुथार को श्रीशंकर शिक्षायतन द्वारा वर्ष २०२१ के ऋषिसम्मान से सम्मानित किया गया। यह सम्मान प्रो. सुथार को वैदिकविज्ञान एवं संस्कृत शास्त्रपरम्परा के अनुशीलन तथा संवर्द्धन में महनीय योगदान के लिए दिया गया। ऋषिसम्मान के रूप में प्रमाणपत्र, प्रशस्तिपत्र, २५,००० रु. की धनराशि एवं शॉल प्रदान कर उन्हें सम्मानित किया गया।

गूगल मीट के माध्यम से समायोजित इस वैदिक विज्ञान वेब संगोष्ठी का संचालन श्री शंकर शिक्षायतन के वरिष्ठ शोध अध्येता डॉ. लक्ष्मी कान्त विमल ने तथा अतिथियों के प्रति आभार ज्ञापन डॉ. मणि शंकर द्विवेदी ने किया। कार्यक्रम का शुभारम्भ वैदिक मङ्गलाचरण से एवं समापन शान्तिपाठ से हुआ। इस कार्यक्रम में देश के विभिन्न प्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थानों के शताधिक आचार्यों एवं शोधार्थियों ने अपनी सक्रिय सहभागिता द्वारा इसे सफल बनाया।